गीतांजलि लाल: नृत्य प्रस्तुतियां एवं संरचनाएं

नेहा ठाकुर
पीएच.डी शोधार्थी,
पंजाबी विश्वविद्यालय
पटियाला, पंजाब
Email- nehathakur917@gmail.com

सारांश

गीतांजली लाल कत्थक के क्षेत्र की जानी-मानी शख्सियत है। गीतांजली लाल ने अपने पचास वर्ष के कार्यकाल में कत्थक के क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है जिसके लिए इन्हे संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया जा चुका है । गीतांजली लाल द्वारा दिए गए योगदान में से एक हिस्सा इनकी नृत्य प्रस्तुतियों एवं नृत्य संरचनाओं का है, जिसने कत्थक के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध-पत्र में इस हिस्से को प्रस्तुत करने की ईमानदार कोशिश की गयी है। यह शोध-पत्र शोद्यार्थी द्वारा अपने पीएचडी के शोध-प्रबंध जोकि अभी जारी है, के एक अध्याय में से लिया गया है। शोद्यार्थी का उदेश्य इस शोध-पत्र के द्वारा गीतांजली लाल के कुछ खास कार्यों से परिचित करवाना है, खासकर उनको जो कत्थक के या कला के किसी भी क्षेत्र में अपना नाम बनाना चाहते है।

प्रमुख शब्द – गीतांजली लाल, कत्थक, नृत्य प्रस्तुति, नृत्य संरचना

परिचय - गीतांजली लाल कत्थक के क्षेत्र का एक प्रसिद् नाम है, जिन्होंने कत्थक के क्षेत्र में कई महत्पूर्ण कार्य किये। गीतांजली लाल ने अपने आज तक के सम्पूर्ण कार्यकाल में अपनी नृत्य प्रस्तुतियों एवं नृत्य संरचनाओं के माध्यम से कत्थक के प्रचार-प्रसार में अहम् योगदान दिया है।

गीतांजली लाल का जन्म 6 नवम्बर, दिन रविवार, 1948 में बड़ौदा गुजरात में हुआ था। इनके पिता श्री रजनीकांत देसाई तथा माता श्रीमति परिमला देसाई दोनों ही संगीत में निपुण थे। श्री रजनीकांत देसाई शास्त्रीय संगीत गायक फ़ैयाज़ खान के शिष्यों में से एक थे। रजनीकांत देसाई गायक होने के साथ-साथ एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय, मुंबई में संगीत विभाग में भी कार्यरत रहे। गीतांजली को संगीत की आरम्भिक शिक्षा अपने पिता से प्राप्त हुई। गीतांजली के पिता अपनी पुत्री गीतांजली को गायिका बनाना चाहते थे पर गीतांजली के रुझान ने उन्हें नृत्य की तरफ मोड़ा। गीतांजली कत्थक के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत में भी पारंगत है तथा कश्मीर विश्वविद्यालय से संगीत में स्नातक भी है।

गीतांजली लाल ने नृत्य की शिक्षा छ: वर्ष की आयु में गुरु रोशन कुमारी जी से ग्रहण करनी आरम्भ की जिसके बाद इन्हें नटराज गोपी कृष्ण, प्रो. मोहनराव कल्यानपुरकर एवं पं. देवी लाल से भी नृत्य शिक्षा प्राप्त करने सुअवसर प्राप्त हुआ। इसके साथ ही गीतांजली लाल ने कत्थक केंद्र की रिपर्टरी में पं. बिरजू महाराज के निर्देशन में लखनऊ घराने की बारीकियों को भी सीखा।

गीतांजली लाल ने अपने पूरे कार्यकाल में कई नृत्य प्रस्तुतियां दी है और आज भी यह कार्य जारी है। गीतांजली लाल की प्रत्येक नृत्य प्रस्तुति दूसरी से भिन्न होती है। इन्होने कई नई नृत्य संरचनाएं भी प्रस्तुत की जिनमें गीतांजली लाल ने कई कथानकों को प्रस्तुत किया।

सामग्री संग्रह - इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए सामग्री एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित स्त्रोतों से जानकारी हासिल की गई है -

- ✓ गीतांजली लाल से साक्षात्कार
- ✓ लिखित पुस्तकों से प्राप्त सामग्री
- ✓ समाचार-पत्रों में छापे गए लेख
- ✓ गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त नृत्य समारोहों के आमंत्रण-पत्र एवं विवरणिकाऐ
- ✓ विभिन्न पत्रिकाओं में छपे लेख
- ✓ इंटरनेट द्वारा प्राप्त सामग्री

नृत्य प्रस्तुतियां

गीतांजली लाल ने नौ वर्ष की आयु में अपनी पहली नृत्य प्रस्तुति गुरु रोशन कुमारी जी के निर्देशन में बाल दिवस के अवसर पर मुंबई में प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम में जवाहर लाल नेहरू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। गीतांजली लाल के अनुसार - ज्यादा तो कुछ याद नहीं पर इतना याद है कि रोशन कुमारी जी ने मेरे लिए मोरपंखी नीले रंग का लैहंगा बनवाया था जिसके ऊपर गोल्डन रंग की बुटिया थी और साथ में पीले रंग का ब्लाउज था।[1]

अपनी इस प्रथम प्रस्तुति के पश्चात गीतांजली ने गोपी कृष्ण जी के निर्देशन में गोपी कृष्ण जी के नृत्य विद्यालय की तरफ से आयोयित नृत्य प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम पुरस्कार हासिल किया। इस नृत्य प्रस्तुति में मुख्य अतिथि पं. शंभू महाराज थे जिनके हाथों से गीतांजली ने पुरस्कार ग्रहण किया।

भारत के श्रेष्ठ तबला वादक गीतांजली लाल की नृत्य प्रस्तुतियों के साथ संगत कर चुके हैं, जैसे - पं. सामता प्रसाद, पं. किशन महाराज, लच्छू महाराज, सुभाष निरवान एवं उस्ताद लतीफ़ अहमद खान इत्यादि। इसके साथ ही

[1] गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी - 07.04.2015

सिदेश्वरी देवी, बेगम अख्तर, शुभा मुदगल, विद्या राव आदि प्रसिद् शास्त्रीय गायिकायों ने भी गीतांजली की नृत्य प्रस्तुतियों के साथ गायन पर साथ दिया।[2]

गीतांजली लाल ने ना केवल नृत्य प्रस्तुतियां दी बल्कि कई देशों में जा कर नृत्य कार्यशाला का संचालन भी किया, जिस कारण कई कत्थक सिखने वालों का सपना साकार हुआ। भारतीय संस्कृति मंत्रालय के दवारा भारतीय संस्कृति एवं कला के आदान-प्रदान के लिए कई बार गीतांजली लाल को कत्थक नृत्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए दूसरे देशों में भी भेजा गया।

भारत में दी गई प्रस्तुतियां

भारत के लगभग प्रत्येक प्रान्त में गीतांजली ने अपने नृत्य के द्वारा कत्थक का प्रचार-प्रसार किया। गीतांजली लाल दूरदर्शन की "ए" ग्रेड की कलाकार हैं। इन्होंने दूरदर्शन पर कई नृत्य प्रस्तुतियां दर्ज करवायी, जिनमें से प्रथम प्रस्तुति इन्होंने सन 1969 में दिल्ली दूरदर्शन के लिए दी। इस नृत्य प्रस्तुति में ठुमरी की प्रसिद् गायिका सिदेश्वरी देवी ने गायन पर संगत की।[3]

दूरदर्शन की इन प्रस्तुतियों के अलावा गीतांजली लाल ने बतौर युवा कलाकार अपना पहला कार्यक्रम दिल्ली के सपरु हाऊस में पेश किया। 'एन इवनिंग ऑफ डांसिस' नाम के इस कार्यक्रम का अयोजन 'इंडियन कल्चरल सोसायटी' की तरफ से 22 दिसम्बर 1970 को किया गया।[4] गीतांजली लाल ने अपनी इस एकल प्रस्तुति में मीरा के भक्ति पद 'सखी मारी नींद ना सानी हो' पर भाव पेश कर अपने मजबूत अभिनय का सबूत दिया। उस शाम हुई इस प्रस्तुति से गीतांजली ने दर्शकों तथा आलोचकों में अपनी एक खास पहचान बना ली। कत्थक के क्षेत्र में गीतांजली की प्रगति को देखते हुए सुर-सिंगार-समसद (मुंबई) द्वारा सन 1970 में गीतांजली लाल को 'कल-के-कलाकार' नृत्य सम्मेलन में भाग लेने का आमंत्रण प्राप्त हुआ[5] जिसके पश्चात् गीतांजली ने 'कल-के-कलाकार' सम्मेलन में नृत्य प्रस्तुत कर अपने गुरुजनों और परिवार का सम्मान बढ़ाया। इस प्रकार गीतांजली ने युवा आयु में ही अपने हुनर और परिश्रम से कत्थक जगत में एक खास मुकाम बना लिया और दर्शकों की उम्मीदों को सदैव पूरा किया।

जब सन 1976 में गीतांजली लाल ने कत्थक केन्द्र की रिर्पटरी में बतौर कत्थक नर्तकी अपने कार्य की शुरूआत की तब कत्थक सम्राट पं. बिरजू महाराज के निर्देशन में इन्होंने कई नृत्य प्रस्तुतियों में मुख्य पात्र अभिनीत किए। 29, 30 नवम्बर और 2 दिसम्बर को कमानी सभागार, दिल्ली में आयोयित कत्थक महोत्सव में गीतांजली ने पं.

[2] गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी - 22.07.2016

[3] गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी - 08.04.2015

[4] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम की विवरणिका

[5] द करंट, तिथी - 29.08.1970

बिरजू महाराज दवारा निर्देशित नृत्य-नाटिका 'कथा रघुनाथ की' में सीता की मुख्य भूमिका निभाई[6] एवं यह साबित कर दिखाया की वह केवल कत्थक के नृत पक्ष ही नहीं अभिनय पक्ष में भी उतनी ही निपुण है। गीतांजली लाल के हुनर को पहचानते हुए पं. बिरजू महाराज जी ने इन्हें अपनी अन्य नृत्य संरचनाओं में भी मुख्य पात्र अभिनीत करने के लिए दिए, जैसे क़ी कृष्णनायन में राधा की भूमिका, हब्बा खातून में हब्बा खातून की भूमिका आदि।[7]

इनके इलावा गीतांजली की कला का एक अनोखा एवं दूसरा पहलू हमें पं. बिरजू महाराज की संरचना खण्डिता नायिका में भी दिखाई देता है।[8] गीतांजली लाल ने दस वर्ष रिर्पटरी में कार्य के उपरांत सन 1986 में बतौर वरिष्ठ शिक्षिका का कार्य सम्भाला जिसके पश्चात् इन्होंने जयपुर घराने की कत्थक गुरु, कत्थक केन्द्र की निर्देशक एवं रिर्पटरी चीफ इत्यदि पदों की शोभा बढ़ाई।

कत्थक केन्द्र की रिर्पटरी के कार्य के दौरान गीतांजली ने बहुत सारी एकल प्रस्तुतियां दी, जिनमें से ज्यादातर नृत्य प्रस्तुतियों में उ. लतीफ़ अहमद खान ने संगत की। परन्तु आज यह उच्चकोटि के कलाकार हमारे बीच मौजूद नहीं है। 27 दिसम्बर, 1982 त्रिवेणी सभागार में हुए 'इण्डियन कल्चरल सोसायटी ऑफ डांस एंड म्यूजिक फेस्टीवल' में गीतांजली ने उ. लतीफ़ अहमद खान के तबले के साथ एकल प्रस्तुति दी।[9] इसके इलावा सुर-सिंगार-समसद (मुंबई) एवं 1978 में नगर-सेवा-संघ (बड़ौदा) द्वारा आयोजित गीतांजली की एकल प्रस्तुति में भी उ. लतीफ़ अहमद खान ने मंच पर गीतांजली के साथ दिया।[10]

गीतांजली लाल ने अपनी इन कुछ शुरुआती प्रस्तुतियों से यह साबित कर दिया कि नृत्य के क्षेत्र में अभी इन्हें काफी आगे जाना है। इस तथ्य का प्रमाण टाइम्स ऑफ़ इंडिया समाचार पत्र में छपे लेख में कुछ इस प्रकार मिलता है- आकर्षक व्यक्तित्व की धनी गीतांजली लाल की प्रस्तुति देखने में मनभावन थी। नृत्य, अभिनय एवं पद-संचालन दर्शकों का ध्यान खींचने में सफल था। गीतांजली लाल की दूरदर्शिता इनके पद-संचालन, ताल और समय की समझ में साफ झलकी।[11]

---

[6] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम का आमंत्रण-पत्र

[7] पं. तीरथराम आज़ाद, कत्थक ज्ञानेश्वरी, पंना- 353

[8] सुभाषिनी कपूर, कथक नृत्य का परिचय, पंना- 180

[9] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम का आमंत्रण-पत्र

[10] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम का आमंत्रण-पत्र

[11] द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली, 1978

"Blessed with an appealing personality, her presentation was pleasing to watch……The dance cought the attention of the audience with an interplay of subtle 'Abhinaya' and clear footwork….. Geetanjali's forte was evidently her woodwork and her immaculate sense of rhythm and timing."

सन 1977 में भारत की राजधानी नई दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित पं. दुर्गा लाल स्मृति समारोह में गीतांजली लाल ने एकल प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति के बारे में जनसत्ता समाचार-पत्र में प्रकाशित हुआ - राजधानी के कमानी सभागार मेँ पंडित दुर्गालाल समृति समारोह का समापन अलारमेल वली के भरतनाटयम नृत्य से हुआ। इसी समारोह मेँ गीतांजली लाल ने भी कथक में अपने रंग और तेवर दिखाए। जयपुर घराने से जुङी गीतांजली ने कथक की कुछ चुनिंदा चालों को खास जयपुरी अंदाज में पेश किया। भकितपूर्ण रचना पर नृत्य का आरंभ करने के बाद उन्होंने अपना हुनर कथक के विविध प्रकारों को पेश करने में दिखाया। ठाठ, आमद, उठान, तोङे, टुकङे, गत-निकास आदि को प्रस्तुत करने में गीतांजली की एक खूबसूरत अदायगी थी। तीनताल पर लय को बरतने, उनके कई दर्जो और बोलबांट करने में उनकी सूझबूझ काबिले तारीफ रही। चलन में कुछ विकट प्रकार की लयों को भी उन्होंने सहजता और तल्लीनता से पेश किया। द्रुत में भी उनके पैरों का संतुलन और बढत में लय पूरी तरह से कायम थी। राग खमाज में ठुमरी – 'जाओ बलम ना बोलो' गायन पर श्रृंगारिक गायिका का भाव नृत्य और अभिनय में मोहकता से उभरा। इस प्रस्तुति को समपूर्णता प्रदान करने में ज्वाला प्रसाद का गायन और तेज प्रकाश तुलसी की पढंत खास थी।[12]

सन 1991 में साहित्य परिषद् के द्वारा आयोजित 'झनकार' में गीतांजली लाल की प्रस्तुति ने सभी की वाहवाही हासिल की। त्रिवेणी सभागार में संपन्न हुई इस प्रस्तुति में गीतांजली ने अपने अभिनय व् पद-संचालन से दर्शकों को सम्मोहित किया। वसंत अय्यर के अनुसार - तेजस्वी मंच उपस्थिति की धनी गीतांजली लाल ने पारम्परिक कत्थक की जटिल लय और बारीकियों के साथ दर्शकों को आनंदित किया। कोई भी हिस्सा ज्यादा छोटा या तुच्छ नहीं था। हर एक टुकड़ा, गत, आमद या परन को विस्तार से दिखाया गया था।[13]

एक एक अन्य यादगार नृत्य प्रस्तुति गीतांजली लाल ने उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के तत्वाधीन लच्छू महाराज की याद में आयोजित समारोह 'नमन' में प्रस्तुत की। इसके बारे में एक लेख के शब्द कुछ इस प्रकार थे - उतर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के तत्वाधान में आज शाम संत गाडगे महाराज प्रेश्राग्रह में कथक समराट पं. लच्छू नहाराज की समृति में आयोजित कार्यक्रम 'नमन' में गीतांजली लाल के कथक ने कला प्रेमी दर्शकों को समोहित किया। संगीत से सजे कार्यक्रम में रोशन कुमारी, गोपी कृष्ण, प्रो. मोहनराव कल्यानपुरकर, देवीलाल, रजनीकांत देसाई की सुयोग्य पटु शिष्या गीतांजली लाल ने अपने कार्यक्रम की नींव राग दुर्गा 'देवी भजो दुर्गा भवानी' पर रखकर अपने कौशल से भगवती देवी के साक्षात् दर्शन करवाए। भक्ति भावना से ओत-प्रोत इस प्रस्तुति के पश्चात

---

[12] जनसत्ता, दिल्ली, तिथी -27.09.1997

[13] इंडियन एक्सप्रेस, तिथी -22.09.1991

"Blessed with a stunning stage presence, Geetanjali delighted the audience by the intricate rhythms and nuances of traditional kathak. No part was too-small or insignificant, every Tukda, Gat, Amad or Paran was delineated in great detail."

गीतांजली ने कथक की ऊँची-नीची पगडंडियों पर हौले से पाँव रखते हुए त्रिताल में जयपुर घराने की बंदिशों यथा उठान, परन, लडी, चकरदार परन आदि की मनोहर प्रस्तुति दी, जो उनकी सालों की कठिन नृत्य साधना को दर्शा गयी।

इस प्रस्तुति के पश्चात गीतांजली लाल ने माधवी शुक्ल की रचना 'तोरी बात एक नाहीं मानहू' और सूरदास के पद 'चलत देखी जसुमति सुख पावे' पर भावपूर्ण अभिनय नृत्य प्रस्तुत कर कला प्रेमी दर्शकों को जैसे सम्मोहित कर लिया, लोग एकटक देखते रहे। इस प्रस्तुति में उनकी नृत्य बारीकियां, लयकारियां और भावाभिनय की असीम प्रतिभा झलकी। गीतांजली लाल के कार्यक्रम के मेरूदंड रहे तबले पर योगेश गंगानी, गायन पर समीर उला खान, सारंगी पर एहसान अली और पढंत पर विधा लाल।[14]

इन सबके अलावा गीतांजली लाल ने भारत के विभिन शहरों, जैसे- मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, बंगलुरू, लखनऊ, जयपुर, गुजरात, वडोदरा, बनारस, उडीसा, मंगलौर, असाम, पटना, बिहार, पटियाला, चंडीगढ आदि में दी गई अनगिनत प्रस्तुतियों से लोगों का मन मोहा।

विदेशों में दी गई प्रस्तुतियां

गीतांजली लाल ने सन 1971 में नृत्य प्रस्तुति देने के लिए पहली बार विदेश यात्रा अमेरिका की की। यह प्रस्तुति अमेरिका के न्यूजर्सी एवं न्यूयोर्क शहरों में दी गई, जहाँ पर पहली बार गीतांजली ने विदेशियों को अपने नृत्य से रूबरू करवाया। गीतांजली लाल के अनुसार यह विदेश यात्रा उनके लिए बड़ी खास थी एवं वहां के लोगों प्यार आज भी उनके लिए अनमोल है।[15]

अमेरिका के बाद सन 1977 में गीतांजली लाल ने पं बिरजू महाराज के निर्देशन में कत्थक की रिर्पटरी के साथ अफगानिस्तान की यात्रा की। अफगानिस्तान में हुई इस प्रस्तुति को वहां के लोगों का प्यार मिला और गीतांजली नृत्य के साथ-साथ इनकी गायिकी के हुनर को भी सराहा गया। यहीं के एक स्थानीय रेडियो ने गीतांजली लाल की गायिकी से प्रभावित होकर इनसे एक पर्शियन रिकॉर्डिंग करवाई जो पूरा वर्ष उस रेडियो स्टेशन पर चलाई गयी।[16]

गीतांजली लाल ने आई.सी.सी.आ.र की तरफ से सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के लिए भेजे गए नृत्य दल का प्रतिनिधित्व करते हुए सन 1981 में इंग्लैंड की यात्रा की। यहाँ पर लंदन शहर के कन्वै हॉल में आयोजित 'नार्थ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड डांस' प्रोग्राम में गीतांजली ने नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमे तबले पर लतीफ़ अहमद खान, सारंगी पर निकोलस मेगरील एवं सितार पर विगम जसानी ने संगत की। द आर्ट्स गार्डियन के अनुसार - "It

[14] लखनऊ, तिथी - 31.08.2009

[15] गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी - 08.04.2015

[16] गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी - 08.04.2015

was when the winson kathak dancer,Geetanjali joined the extravaganza that the rhythmic delights were fully perceived with her ankle-bells Geetanjali complemented the drumming by the maestro Ustad Latif Amed Khan, brilliantly….The well known butter episode was danced charmingly."[17]

इसी तरह गीतांजली लाल ने सन 1987 में 'फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया' में भाग लेने के लिए मास्को की यात्रा की।[18] द टाइम्स ऑफ़ इंडिया के अनुसार - "Her most memorable performance abroad, she says, has been at the festival of India at Moscow in 1987. "I was simply adored by the response we received." She reminisces. "the audience simply queued up after the dance to greet us with the flowers and bouquets. It was touched by their enthusiasm – an enthusiasm, which is lacking in people here. Here they respect you more, if you have achieved something abroad," she quips.[19]

इन सबके इलावा गीतांजली लाल ने लंदन के 'डर्टिंगटन कॉलेज ऑफ़ फाइन आर्ट्स, डिवॉन' में भी बतौर गेस्ट फैकल्टी नियुक्त किया गया।[20] गीतांजली लाल को मॉरिशस के 'इंदिरा गांधी सेंटर फॉर इंडियन कल्चर' में भी आई.सी.सी.आर. की तरफ से नृत्य शिक्षा प्रदान करने के लिए भेजा गया।[21]

नृत्य संयोजक एवं गुरु के तौर पर किये गए कार्य

गीतांजली लाल ने कत्थक के क्षेत्र में कदम रखने के बाद कत्थक के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्य किये जिनका वर्णन किया जा चुका है परन्तु यहां यह ध्यान देने योग्य है कि प्रत्येक नृत्य प्रस्तुति की एक खास सरंचना होती है, चाहे वह एकल हो, युगल या सामूहिक। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक कलाकार की नृत्य प्रस्तुति की एक खास सरंचना होती है जो उस कलाकार के रचनात्मक पक्ष को दर्शाती है। गीतांजली लाल की प्रत्येक नृत्य प्रस्तुति से ऐसी अनगिनत बातें सामने आती है जोकि इनकी प्रत्येक नृत्य प्रस्तुति को अन्य से भिन्न बनाती है। इनकी नृत्य रचनाओं के पीछे इनकी

[17] द आर्ट्स गार्डियन, लंदन, 1981

[18] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम का आमंत्रण-पत्र

[19] द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, बड़ौदा, तिथी – 03.06.2000

[20] रेजिनाल्ड मस्से, इंडियन डांसेज, पंना - 248

[21] रेजिनाल्ड मस्से, इंडियन डांसेज, पंना - 248

रचनात्मक सोच के साथ-साथ इनके संस्कारों एवं व्यक्तित्व के गुणों का सम्मिश्रण भी देखने को मिलता है। गीतांजली लाल ने प्रचलित कथानकों के अलावा अपने आस-पास की घटनाओं पर आधारित कथानक भी कत्थक के माध्यम से पेश किये। गीतांजली लाल ने अपनी नृत्य रचनाओं के संगीत और वेशभूषा इत्यादि पर भी खास कार्य किया, जिसने कत्थक को एक नए नज़रिये के साथ प्रस्तुत करते हुए दर्शकों को कत्थक के पारंपरिक स्वरुप के साथ नवीनता के भी दर्शन करवाए। गीतांजली लाल की नृत्य संरचनाओं के संग्रह में से कुछेक का वर्णन यहां प्रस्तुत है -

वर्षा-मंगल - सन 1986 में कत्थक केंद्र में बतौर वरिष्ठ शिक्षिका कार्य की शुरुआत के बाद गीतांजली लाल ने कत्थक महोत्सव के मौके पर 'वर्षा-मंगल' नामक नृत्य संरचना तैयार की। वैसे तो गीतांजली लाल ने पहले भी कई नृत्य प्रस्तुतियों को संयोजित किया था परन्तु बतौर कत्थक गुरु यह गीतांजली लाल की प्रथम संरचना थी, जिसे देखने का उत्साह हर किसी को था। वर्षा-मंगल में बरसात की खूबसूरती को पं. ज्वाला प्रसाद के संगीत एवं उत्तर प्रदेश के लोक गीत 'घीरी घीरी आयी सावन की बदरिया' के साथ गीतांजली की दस शिष्यों ने बड़ी ही सुंदरतापूर्वक प्रस्तुत किया। जिसमे नर्तकियों की वेशभूषा-सज्जा भी आसमानी रंग की विभिन्न पर्तों को दर्शाते हुए तैयार की गयी थी।

श्रृंगार-चंद्रिका - गीतांजली लाल ने नृत्य रचना 'श्रृंगार-चंद्रिका' में कई रागों की बंदिशो पर नृत्य और भाव पेश करने का एक नया प्रयास था। हालांकि भाव प्रधान गायिकी की गत नृत्य के जरिए बताना मुशिकल है। पर राग छायानट, सोहिनी, पूरिया, कौशिकी कान्हड़ा राग की बंदिशो पर गीतांजली द्वारा नृत्य भाव की संरचना पर एक अच्छी प्रस्तुती देखने को मिली। छायानट के 'झनक-झनक बाजे बिछुआ' औऱ सोहिनी में 'चलो हटो जाओ-जाओ' के श्रृंगारिक भावों को गीतांजली और राम मोहन ने मोहकता से पेश किया। पर पूरिया और कौशिकी कान्हड़ा में समूह और एकल नृत्य सामान्य था। संरचना में बंदिशों को स्वर देने में ज्वाला प्रसाद का संगीत बेहतरीन था।[22]

इन्द्रधनुष - गीतांजली लाल ने 'इन्द्रधनुष' संरचना में इन्द्रधनुष से प्रेरित होकर इन्द्रधनुष के विभिन्न रंगों की तरह ही कत्थक के विभिन्न रंगों को, जैसे- कत्थक का नृत्त पक्ष, वाद्य-वृन्द एवं वेशभूषा आदि को प्रस्तुत किया। इस इन्द्रधनुष संरचना की प्रस्तुति संगीत नाटक अकादमी की 50वीं वर्षगांठ पर प्रस्तुत की गई। द हिन्दू के अनुसार गीतांजली लाल द्वारा निर्देशित की गई कत्थक केंद्र की इस सामूहिक प्रस्तुति इन्द्रधनुष को देखना एक सुखद अनुभव था।[23]

[22] जनसत्ता, दिल्ली, तिथी -17.02.1989

[23] द हिन्दू, शुक्रवार, तिथी – 02.02.2001

"Kathak Kendra group item 'indra Dhanush', designed by Geetanjali Lal, was a visually delighted production, the colourfully costumed dancers are like a rainbow, combining in well-rehearsed formations.Contrasting with the collective expression of grace and laya, with glimpses of abhinaya to poetry and a tarana in Darbari was the tandav brilliance of men- Praveen Gangani, Abhay Mishra and Abhimanyu Lal- whose now proven percussion-cum-dance provided the hight point of rhythmic virtuosity. The electrical freezes and the twinkling footwork were all in the best traditions of kathak ebullience."

इसी इन्द्रधनुष संरचना की अन्य प्रस्तुति राष्ट्रीय कत्थक संस्थान के तीन दिवसीय कत्थक समारोह में लखनऊ के गाँधी सभागार में भी दी गई। इसके बारे में दैनिक जागरण समाचार पत्र में छपे लेख के शब्द - दिल्ली कथक केंद्र के कलाकारों की जब बारी आयी तो गीतांजली लाल के नृत्य व संगीत निर्देशन में अपूवा वाडके, पूजा श्रीवासतव, रश्मि उपल, विधा जोशी, परमीता डोभाल, सुदेशना मलिक, संगीत कुवर, अभय शंकर मिश्र, प्रवीण गंगानी व अभिमन्यु ने भाव पक्ष के सुंदर समन्वय से सजी सतरंगी इंद्रधनुष संरचना को पूरी तन्मयता के साथ मंच पर जिया। यह एक मनोहारी प्रस्तुति थी, जिसमें आधुनिकता का समावेश भी दिखा। इन कलाकारों के साथ सितार पर विजय शर्मा, सारंगी पर जफर व तबले पर योगेश गंगानी थे। गायन रमेश परिहार ने किया।[24]

द स्पिरिट - इस नृत्य संरचना में गीतांजली लाल ने कत्थक की गति को प्रस्तुत किया, जिसके लिए गीतांजली लाल ने ऐसी चार नर्तकियों को चुना जो नृत्य में तैयार तथा लय-ताल में धुआंधार थी। इस नृत्य संरचना का संगीत गीतांजली लाल एवं वेशभूषा विधा लाल ने तैयार की जो कि फ्लेमेंको नृत्य से प्रभावित थी। लीला वेंकटरमण के अनुसार गीतांजली लाल की अवधारणा द स्पिरिट चार शानदार एवं सुंदर नर्तकियों विधा, गौरी, रश्मि उप्पल एवं नम्रता के साथ दस व् सोलह मात्रा में देखने के लिए सुंदरता से भरी होने के साथ स्वाद में स्पेनिश थी, पर अभिनय में अप्रतिस्पर्द्धी साबित हुई।[25]

मोमेंट 2001 - गीतांजली लाल ने अपनी इस नृत्य संरचना में आम जीवन की घटनाओं को भी कत्थक में संयोजित करने का साहसी कार्य किया। गीतांजली लाल ने वर्ष 2001 की प्रमुख घटनाओं को इसमें चित्रित किया जिस कारण इस संरचना को मोमेंट 2001 नामांकित किया गया। गीतांजलि लाल ने अपने सपुत्र अभिमन्यु के साथ मिल कौन बनेगा करोड़पति, लगान फिल्म, भुज का भूकंप, डबल्यूटीसी का हमला तथा ओसामा बिन लादेन के बारे में कत्थक के माध्यम से सभी घटनाओं को प्रतिपादित किया।[26]

---

[24] दैनिक जागरण, लखनऊ, तिथी – 20.03.2001

[25] लीला वेंकटरमन द्वारा समाचार-पत्र में प्रकाशित लेख, दिल्ली, 2004
"Geetanjali's concept 'The Spirit', very Spanish in flavor with four tastefully costumed beautiful dancers Vidha, Gauri, Rashmi and Namrita was pure visual aesthetics in the 10 and 16 matras, but proved uncommunicative in abhinaya."

[26] . इंडियन एक्सप्रेस, तिथी – 12.12.2001
Lal, who teaches at kathak Kendra will show impactful events like koun Bnega Crorepati?, Laagan, Bhuj's earthquake, the WTC attack and Osama Bin laden, though kathak."

मेघदूत - गीतांजली लाल ने मेघदूत की पौराणिक कथा को भी कत्थक की बंदिशों एवं अंग-संचालन के साथ प्रस्तुत किया। गीतांजली लाल ने प्रमाणित कर दिखाया कि कत्थक केवल नृत्य शैली नहीं है जिसमे केवल अंग-संचालन है बल्कि अभिनय के द्वारा कथा कहने का एक सबल माध्यम है। इसीलिए कत्थक के लिए यह उक्ति प्रसिद् है - कथा करे सा कत्थक कहावे। कत्थक का यही प्रयोग गीतांजली लाल ने अपनी नृत्य-नाटिका मेघदूत में किया। इसकी प्रस्तुति मॉरिशस का इंदिरा गाँधी सेंटर फॉर इंडियन कल्चर के 'परम्परा महोत्सव' के मौके पर दी गई।[27]

इन सबके अतिरिक्त गीतांजली लाल ने ऋतुरंग, कामिनी, चंडालिका, चित्रांगदा, खेल-खेल में, द्रौपदी, तालात्मिका, मल्हार, नायिका, सूर्यशरणम, अवरोह, सहेली, अंताक्षरी, शिव-पार्वती विवाह, होली तथा सृजन नामक अनेक नृत्य-संरचनाएं व् नृत्य-नाटिकाएं तैयार की।

उपसंहार – उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गीतांजली लाल कत्थक का ऐसा चमकता सितारा है जिन्होंने कत्थक को देश-विदेश में रोशन किया। गीतांजली लाल ने भारत के प्रांतों में एवं विदेशों में भी अनगिनत नृत्य प्रस्तुतियों के साथ कत्थक को प्रचारित किया। इसके साथ ही कत्थक में कई नवीन संरचनाएं तैयार कर दर्शको को कत्थक की तरफ आकर्षित किया। गीतांजली लाल ने अपनी नृत्य संरचनाओं से यह साबित किया कि कत्थक नृत्य शैली ही एकमात्र नृत्य शैली है जिसमे किसी भी कथानक को फिर वो चाहे पौराणिक हो या आधुनिक, प्रस्तुत किया जा सकता है। कत्थक की परम्परिक स्वरुप के साथ आधुनिकता को जोड़कर गीतांजली लाल ने जिस प्रकार का उदाहरण पेश किया है वह अपने आप में प्रशंसनीय है। गीतांजली लाल द्वारा प्रस्तुत की गयी नृत्य प्रस्तुतियों ने भारत के कोने-कोने में कत्थक का प्रचार किया। इसके साथ ही विदेशों में भी कलाप्रेमियों को कत्थक के स्वरुप से परिचित करवाया। गीतांजली लाल ने मोमेंट 2001 जैसे नृत्य संरचना तैयार की, जिसमें कौन बनेगा करोड़पति, लगान फिल्म, भुज के भूकंप तथा अमेरिका के ट्विन टावर की घटना को नाटकीय अंदाज़ में कत्थक की बंदिशों के साथ प्रस्तुत किया। गीतांजली लाल द्वारा निर्देशित नृत्य-नाटिका मेघदूत, चंडालिका, आदि ने भी नृत्य-नाटिकाओं के क्षेत्र में उम्दा प्रदर्शन किया। गीतांजली लाल के इन सभी साहसी प्रयोगों ने कत्थक में नए कथानकों का प्रयोग करते हुए नवीनता के साथ प्रस्तुत किया। गीतांजली लाल के यह सभी कार्य आज की युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक है, प्रेरणास्त्रोत है ।

संदर्भ पुस्तक सूची:

1. गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रमों की विवरणिकाऐ
2. गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रमों के आमंत्रण-पत्र

[27] गीतांजली लाल के निजी संग्रह से प्राप्त कार्यक्रम की विवरणिका

3. तीरथराम आज़ाद, *कत्थक ज्ञानेश्वरी*, नटेशवर कला मंदिर, दिल्ली, 2008
4. सुभाषिनी कपूर, *कथक नृत्य का परिचय*, राधा पबिलकेशन्स, नई दिल्ली, 1997
5. द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, नई दिल्ली, तिथी - 1978
6. द आर्ट्स गार्डियन, लंदन, तिथी - 1981
7. रेजिनाल्ड मस्से, *इंडियन डांसेज*, अभिनव पबिलकेशन्स, नई दिल्ली, 2004
8. लीला वेंकटरमन द्वारा समाचार-पत्र में प्रकाशित लेख, दिल्ली, 2004
9. द करंट, तिथी – 29.08.1970
10. जनसत्ता, दिल्ली, तिथी – 17.02.1989
11. इंडियन एक्सप्रेस, तिथी – 22.09.1991
12. जनसत्ता, दिल्ली, तिथी – 27.09.1997
13. द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, बड़ौदा, तिथी – 03.06.2000
14. द हिन्दू, शुक्रवार, तिथी – 02.02.2001
15. दैनिक जागरण, लखनऊ, तिथी – 20.03.2001
16. इंडियन एक्सप्रेस, तिथी – 12.12.2001
17. लखनऊ, तिथी – 31.08.2009
18. गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी -07.04.2015
19. गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी -08.04.2015
20. गीतांजली लाल के साथ साक्षात्कार, तिथी – 27.07.2016

Webliography

21. https://www.youtube.com/watch?v=wdYIOj1JITw
22. https://www.youtube.com/watch?v=mNgpIcVj8Wc
23. https://www.youtube.com/watch?v=CAnddsvXYQY
24. https://www.youtube.com/watch?v=zyaBLk4FqI0
25. https://www.youtube.com/watch?v=ByJGA3cDkRA
26. https://www.youtube.com/watch?v=ASxPMe4akKk